



21वीं सदी में भारत की भू-राजनीति और वैश्विक शक्ति संतुलन: एक अवलोकन

सोनू कुमार
शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय
छपरा (सारण), बिहार।

ई-मेल: sonu.putu99@gmail.com

शोध सार

यहाँ आपके द्वारा दिए गए शोध सार (Abstract) का शुद्ध मंगल फ्रॉन्ट (Unicode) में रूपांतरण है:

शोध सार (Abstract)

21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है, जहाँ शीत युद्ध के बाद स्थापित एकध्रुवीय व्यवस्था धीरे-धीरे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में परिवर्तित हो रही है। इस उभरते वैश्विक परिदृश्य में भारत अपनी विशिष्ट भू-राजनीतिक स्थिति, बढ़ती आर्थिक शक्ति, सैन्य क्षमता तथा सक्रिय कूटनीतिक भूमिका के कारण एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया है। भारत की भौगोलिक स्थिति उसे एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ने वाले रणनीतिक मार्गों पर स्थित करती है, जिससे हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में उसकी भूमिका अत्यन्त निर्णायक बन जाती है।

भारत की विदेश नीति का मूल आधार रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व रहा है। क्वाड (QUAD), ब्रिक्स (BRICS), शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और जी-20 (G-20) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी उसके बढ़ते वैश्विक प्रभाव को दर्शाती है। इसके साथ ही भारत "ग्लोबल साउथ" के देशों के हितों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत कर एक सन्तुलनकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है।

हालाँकि, भारत को चीन के साथ सीमा विवाद, क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियाँ, आतंकवाद और वैश्विक आर्थिक अस्थिरता जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसके बावजूद, भारत अपनी सन्तुलित कूटनीति और दीर्घकालिक रणनीति के माध्यम से वैश्विक शक्ति सन्तुलन में एक स्थिरकारी भूमिका निभा रहा है। यह शोध पत्र 21वीं सदी में भारत की भू-राजनीतिक भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि भारत भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक प्रमुख निर्णायक शक्ति बनने की क्षमता रखता है।



मूल शब्द (Keywords): भारत की भू-राजनीति, वैश्विक शक्ति सन्तुलन, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र, रणनीतिक स्वायत्तता, ग्लोबल साउथ।

भूमिका (Introduction)

21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तेजी से बदलते शक्ति समीकरणों से प्रभावित हो रही है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व राजनीति में एकध्रुवीय व्यवस्था स्थापित हुई थी, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रमुख भूमिका रही। किन्तु समय के साथ-साथ चीन, भारत, यूरोपीय संघ तथा अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के उदय ने इस व्यवस्था को चुनौती दी है और विश्व राजनीति धीरे-धीरे बहुध्रुवीय स्वरूप ग्रहण करती दिखाई दे रही है।¹

इस परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य में भारत एक महत्वपूर्ण उभरती शक्ति के रूप में सामने आया है। भारत की बढ़ती आर्थिक क्षमता, जनसंख्या शक्ति, तकनीकी विकास तथा सैन्य सामर्थ्य ने उसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं के अनुसार भारत विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।²

भू-राजनीति (Geopolitics) का सम्बन्ध किसी राज्य की भौगोलिक स्थिति और उसकी राजनीतिक-रणनीतिक शक्ति के बीच के सम्बन्ध से है। भू-राजनीति के प्रमुख सिद्धान्तकारों जैसे हैलफोर्ड मैकिन्डर, अल्फ्रेड थायर महान तथा निकोलस स्पाइकमैन ने यह प्रतिपादित किया कि भौगोलिक स्थिति किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति, सुरक्षा नीति तथा शक्ति-राजनीति को गहराई से प्रभावित करती है।³

भारत की भौगोलिक स्थिति उसे एशिया, मध्य-पूर्व तथा हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र के बीच एक महत्वपूर्ण रणनीतिक केन्द्र बनाती है। हिन्द महासागर क्षेत्र में स्थित होने के कारण भारत वैश्विक समुद्री व्यापार मार्गों के निकट है, जिससे उसकी सामरिक और आर्थिक महत्ता और अधिक बढ़ जाती है।⁴

वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति का मूल आधार रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग तथा शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व रहा है। भारत ने क्वाड, ब्रिक्स, जी-20 और शंघाई सहयोग संगठन जैसे विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भागीदारी करते हुए वैश्विक शक्ति सन्तुलन में अपनी भूमिका को मजबूत करने का प्रयास किया है।⁵

इस शोध-पत्र का उद्देश्य 21वीं सदी में भारत की भू-राजनीतिक भूमिका तथा वैश्विक शक्ति सन्तुलन में उसके योगदान का विश्लेषण करना है। साथ ही यह अध्ययन भारत की विदेश नीति, क्षेत्रीय चुनौतियों तथा वैश्विक रणनीतिक परिवर्तनों के सन्दर्भ में भारत की सम्भावनाओं और सीमाओं का भी मूल्यांकन करता है।

भारत की भू-राजनीतिक स्थिति और उसका रणनीतिक महत्त्व

भू-राजनीति का मूल आधार किसी देश की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संसाधनों, समुद्री मार्गों और क्षेत्रीय परिवेश के आधार पर उसकी राजनीतिक तथा रणनीतिक शक्ति को समझना है। 21वीं सदी में वैश्विक शक्ति संरचना में हो रहे परिवर्तनों के बीच भारत



की भू-राजनीतिक स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गई है। एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित भारत भौगोलिक दृष्टि से एशिया, मध्य-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया के मध्य एक सेतु के रूप में कार्य करता है। यह स्थिति भारत को न केवल क्षेत्रीय राजनीति में बल्कि वैश्विक शक्ति सन्तुलन में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है।⁶

भारत का भौगोलिक विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिन्द महासागर तक फैला हुआ है। हिमालय पर्वत श्रृंखला भारत को मध्य एशिया और पूर्वी एशिया से अलग करती है तथा ऐतिहासिक रूप से यह एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच का कार्य करती रही है। दूसरी ओर दक्षिण में हिन्द महासागर की विस्तृत तटरेखा भारत को समुद्री व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और वैश्विक समुद्री मार्गों से जोड़ती है। इस प्रकार भारत की स्थल और समुद्री दोनों प्रकार की भू-राजनीतिक स्थिति उसे वैश्विक रणनीतिक परिदृश्य में विशेष महत्त्व प्रदान करती है।⁷

हिन्द महासागर क्षेत्र 21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक प्रमुख केन्द्र बन गया है। विश्व के लगभग दो-तिहाई तेल और ऊर्जा संसाधनों का परिवहन इसी समुद्री क्षेत्र से होकर गुजरता है। फारस की खाड़ी से पूर्वी एशिया तक जाने वाले प्रमुख समुद्री मार्ग हिन्द महासागर से होकर गुजरते हैं, जिनका वैश्विक व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत की भौगोलिक स्थिति इन समुद्री मार्गों के निकट होने के कारण उसे रणनीतिक रूप से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है।⁸

भारत की यह सामरिक स्थिति उसे हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र की राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बनाती है। वर्तमान समय में हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र वैश्विक शक्ति प्रतिस्पर्धा का केन्द्र बन गया है, जहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश सक्रिय रूप से अपनी रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत कर रहे हैं। भारत भी इस क्षेत्र में सन्तुलनकारी भूमिका निभाने का प्रयास कर रहा है। क्वाड (Quad) जैसे मंचों में भारत की भागीदारी इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री स्वतन्त्रता और नियम आधारित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बनाए रखना है।⁹

भारत की भू-राजनीतिक स्थिति का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू उसकी जनसंख्या और आर्थिक क्षमता है। वर्तमान समय में भारत विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देशों में से एक है और उसकी अर्थव्यवस्था भी तेजी से विकसित हो रही है। आर्थिक शक्ति किसी भी देश की भू-राजनीतिक शक्ति का एक महत्त्वपूर्ण घटक होती है, क्योंकि आर्थिक संसाधन ही सैन्य क्षमता, तकनीकी विकास और कूटनीतिक प्रभाव को मजबूत करते हैं। भारत की बढ़ती आर्थिक क्षमता ने उसे वैश्विक मंचों पर अधिक प्रभावशाली बना दिया है।¹⁰

इसके अतिरिक्त भारत की भू-राजनीतिक भूमिका दक्षिण एशिया क्षेत्र में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। दक्षिण एशिया के अधिकांश देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत इस क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए सार्क (SAARC) तथा बिम्स्टेक (BIMSTEC) जैसे संगठनों के माध्यम से प्रयास करता रहा है। इन संगठनों के माध्यम से भारत क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक सहयोग और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने का प्रयास करता है।¹¹



हालाँकि भारत की भू-राजनीतिक स्थिति कई चुनौतियों से भी जुड़ी हुई है। चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान के साथ राजनीतिक तनाव तथा क्षेत्रीय सुरक्षा समस्याएँ भारत की रणनीतिक नीतियों को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से चीन के बढ़ते प्रभाव और उसकी 'बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव' जैसी परियोजनाओं ने एशिया में शक्ति सन्तुलन को प्रभावित किया है। भारत इन चुनौतियों का सामना अपनी कूटनीतिक सक्रियता, सैन्य क्षमता और क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से करने का प्रयास कर रहा है।¹²

इसके अलावा समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद, साइबर सुरक्षा और ऊर्जा आपूर्ति जैसी चुनौतियाँ भी भारत की भू-राजनीतिक रणनीति को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए भारत ने बहुपक्षीय सहयोग की नीति को अपनाया है और विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों के माध्यम से वैश्विक सहयोग को मजबूत करने का प्रयास किया है।

अतः स्पष्ट है कि भारत की भौगोलिक स्थिति, समुद्री पहुँच, आर्थिक क्षमता और कूटनीतिक सक्रियता उसे 21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करती है। भारत न केवल दक्षिण एशिया बल्कि हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भी एक स्थिरकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है, जो वैश्विक शक्ति सन्तुलन को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

भारत की विदेश नीति और वैश्विक शक्ति सन्तुलन

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। शीत युद्ध के दौरान भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता के सिद्धान्त पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य वैश्विक शक्ति संघर्ष से दूर रहते हुए स्वतन्त्र विदेश नीति का पालन करना था। किन्तु शीत युद्ध की समाप्ति के बाद वैश्विक राजनीति में आए परिवर्तनों के साथ भारत की विदेश नीति भी अधिक व्यावहारिक और बहुआयामी बन गई है। वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा वैश्विक शक्ति सन्तुलन में सक्रिय भूमिका निभाना है।¹³

भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख आधार रणनीतिक स्वायत्तता (**Strategic Autonomy**) है। इसका अर्थ यह है कि भारत किसी एक शक्ति-गुट के साथ पूर्ण रूप से जुड़ने के बजाय स्वतन्त्र रूप से अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय लेता है। यह सिद्धान्त गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की विरासत से जुड़ा हुआ है, किन्तु वर्तमान समय में इसे अधिक व्यावहारिक रूप दिया गया है। भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान तथा अन्य देशों के साथ सन्तुलित सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास करता है, जिससे वह वैश्विक शक्ति प्रतिस्पर्धा में सन्तुलन बनाए रख सके।¹⁴

भारत की विदेश नीति में बहुपक्षवाद (**Multilateralism**) भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन तथा विश्व व्यापार संगठन जैसे मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाई है। इन मंचों के माध्यम से भारत न केवल वैश्विक मुद्दों पर अपनी स्थिति स्पष्ट करता है, बल्कि विकासशील देशों के हितों की रक्षा करने का भी प्रयास करता है। विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन, वैश्विक व्यापार, सतत विकास और ऊर्जा सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भारत ने महत्वपूर्ण पहल की है।¹⁵



भारत की विदेश नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू 'एक्ट ईस्ट नीति' (Act East Policy) है। इस नीति का उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया के देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक सम्बन्धों को मजबूत करना है। भारत ने आसियान (ASEAN) देशों के साथ व्यापार, निवेश तथा सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। इसके अतिरिक्त भारत ने क्षेत्रीय सम्पर्क परियोजनाओं, समुद्री सहयोग और सुरक्षा साझेदारी को भी बढ़ावा दिया है। इससे एशिया-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की भूमिका अधिक मजबूत हुई है।¹⁶

भारत की विदेश नीति में हिन्द-प्रशान्त रणनीति भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई है। हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र वैश्विक व्यापार और समुद्री सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत ने इस क्षेत्र में स्वतन्त्र और खुला समुद्री मार्ग (Free and Open Indo-Pacific) सुनिश्चित करने के लिए अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ सहयोग बढ़ाया है। क्वाड (Quad) जैसे मंच इसी सहयोग का उदाहरण हैं। इस सहयोग का उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता, समुद्री सुरक्षा तथा नियम-आधारित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को मजबूत करना है।¹⁷

इसके साथ ही भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों के साथ सहयोग को भी अपनी विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया है। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत ने विकास सहयोग, तकनीकी सहायता और क्षमता निर्माण के माध्यम से इन देशों के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत किया है। हाल के वर्षों में भारत ने वैश्विक मंचों पर ग्लोबल साउथ की आवाज को प्रमुखता से उठाने का प्रयास किया है।¹⁸

हालाँकि भारत की विदेश नीति कई चुनौतियों का भी सामना कर रही है। चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान के साथ सुरक्षा तनाव, हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और वैश्विक शक्ति राजनीति की जटिलता भारत के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। विशेष रूप से चीन के बढ़ते आर्थिक और सैन्य प्रभाव ने एशिया में शक्ति सन्तुलन को प्रभावित किया है। इस स्थिति में भारत को अपनी विदेश नीति में सन्तुलन और लचीलापन बनाए रखना पड़ता है।¹⁹

इसके अतिरिक्त वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद जैसे मुद्दे भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत ने क्षेत्रीय और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने की रणनीति अपनाई है।

इस प्रकार 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक शक्ति सन्तुलन को प्रभावित करने वाली एक सक्रिय और बहुआयामी नीति बन चुकी है। भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग और सन्तुलित कूटनीति के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक जिम्मेदार और प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर रहा है।

हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की भूमिका



21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र का महत्त्व तेजी से बढ़ा है। वैश्विक व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री सुरक्षा और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण यह क्षेत्र विश्व राजनीति का प्रमुख केन्द्र बन गया है। हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर को जोड़ने वाला यह विशाल क्षेत्र एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया के अनेक देशों को समाहित करता है। इस क्षेत्र में वैश्विक व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संचालित होता है तथा विश्व के प्रमुख समुद्री व्यापारिक मार्ग भी इसी क्षेत्र से होकर गुजरते हैं। इस कारण हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि सामरिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया है।²⁰

भारत की भौगोलिक स्थिति इस क्षेत्र में उसे एक केन्द्रीय भूमिका प्रदान करती है। हिन्द महासागर के उत्तरी भाग में स्थित भारत समुद्री व्यापार मार्गों के निकट है और उसका विस्तृत तटीय क्षेत्र तथा समुद्री सीमा उसे इस क्षेत्र की राजनीति और सुरक्षा व्यवस्था में एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बनाते हैं। ऐतिहासिक रूप से भी भारत का दक्षिण-पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है। वर्तमान समय में भारत इन ऐतिहासिक सम्बन्धों को आधुनिक कूटनीतिक और आर्थिक सहयोग के माध्यम से पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहा है।²¹

हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की भूमिका को समझने के लिए उसकी विदेश नीति के विभिन्न आयामों का अध्ययन आवश्यक है। विशेष रूप से भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' और 'इण्डो-पैसिफिक रणनीति' इस क्षेत्र में उसकी सक्रियता को स्पष्ट करती हैं। भारत ने 1990 के दशक में 'लुक ईस्ट नीति' की शुरुआत की थी, जिसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों को मजबूत करना था। बाद में इस नीति को और अधिक सक्रिय बनाते हुए 'एक्ट ईस्ट नीति' में परिवर्तित किया गया। इस नीति के माध्यम से भारत ने आसियान देशों के साथ व्यापार, निवेश, सम्पर्क परियोजनाओं और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया है।²²

भारत और आसियान देशों के बीच आर्थिक और रणनीतिक सहयोग में निरन्तर वृद्धि हुई है। भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौता, क्षेत्रीय सम्पर्क परियोजनाएँ तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम इस सहयोग के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त भारत ने म्यांमार, थाईलैण्ड और वियतनाम जैसे देशों के साथ सामरिक और आर्थिक सम्बन्धों को भी मजबूत किया है। इन प्रयासों के माध्यम से भारत न केवल क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में सन्तुलनकारी शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को भी सुदृढ़ कर रहा है।²³

हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू समुद्री सुरक्षा है। हिन्द महासागर क्षेत्र में समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना, मानव तस्करी और समुद्री आतंकवाद जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए भारत ने अपनी नौसैनिक क्षमता को मजबूत किया है तथा क्षेत्रीय देशों के साथ समुद्री सहयोग को बढ़ावा दिया है। भारतीय नौसेना नियमित रूप से विभिन्न देशों के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास करती है, जिससे समुद्री सुरक्षा और सहयोग को बढ़ावा मिलता है।²⁴

भारत ने 'सागर' (SAGAR - Security and Growth for All in the Region) की अवधारणा को भी प्रस्तुत किया है, जिसका उद्देश्य हिन्द महासागर क्षेत्र में सुरक्षा और



विकास के लिए सहयोग को बढ़ावा देना है। इस नीति के अन्तर्गत भारत ने छोटे द्वीपीय देशों जैसे मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स और श्रीलंका के साथ समुद्री सुरक्षा, क्षमता निर्माण और आर्थिक विकास के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ाया है। यह पहल भारत की क्षेत्रीय नेतृत्व क्षमता और उसकी सकारात्मक कूटनीतिक भूमिका को दर्शाती है।²⁵

हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की भूमिका को समझने के लिए क्वाड (Quad) जैसे मंचों का भी उल्लेख आवश्यक है। क्वाड एक अनौपचारिक रणनीतिक समूह है जिसमें भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। इस समूह का उद्देश्य हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में स्वतन्त्र और खुली समुद्री व्यवस्था को बनाए रखना तथा नियम-आधारित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को मजबूत करना है। भारत की इस मंच में भागीदारी यह दर्शाती है कि वह क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार है।²⁶

हालाँकि हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की भूमिका केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है। आर्थिक सहयोग, सम्पर्क परियोजनाएँ और विकास सहयोग भी भारत की रणनीति के महत्वपूर्ण अंग हैं। भारत ने विभिन्न क्षेत्रीय परियोजनाओं के माध्यम से दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया के देशों के साथ आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत किया है। उदाहरण के लिए, भारत-म्यांमार-थाईलैण्ड त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना और कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट परियोजना क्षेत्रीय सम्पर्क को बढ़ावा देने के महत्वपूर्ण प्रयास हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से भारत न केवल व्यापारिक सम्बन्धों को मजबूत कर रहा है, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को भी प्रोत्साहित कर रहा है।²⁷

हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति भी भारत की रणनीतिक नीतियों को प्रभावित करती है। चीन की 'बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव' और हिन्द महासागर क्षेत्र में उसकी बढ़ती नौसैनिक गतिविधियाँ क्षेत्रीय शक्ति सन्तुलन को प्रभावित कर रही हैं। इस स्थिति में भारत को अपनी समुद्री सुरक्षा, कूटनीतिक सक्रियता और क्षेत्रीय सहयोग को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। भारत ने विभिन्न क्षेत्रीय साझेदारियों और बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से इस चुनौती का सन्तुलित तरीके से सामना करने का प्रयास किया है।²⁸

इसके अतिरिक्त भारत ने हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राकृतिक आपदाओं के समय भारत ने कई देशों को मानवीय सहायता प्रदान की है, जिससे क्षेत्रीय सहयोग और विश्वास को बढ़ावा मिला है। उदाहरण के लिए, 2004 की सुनामी के बाद भारत ने अनेक प्रभावित देशों को राहत और सहायता प्रदान की थी। इस प्रकार भारत की मानवीय कूटनीति भी उसकी क्षेत्रीय भूमिका को मजबूत करती है।²⁹

समग्र रूप से देखा जाए तो हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में भारत की भूमिका बहुआयामी है। यह केवल सैन्य या सुरक्षा सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक सम्बन्ध, समुद्री सुरक्षा और मानवीय सहायता जैसे अनेक आयामों को समाहित करती है। भारत की रणनीति का उद्देश्य इस क्षेत्र में स्थिरता, सहयोग और नियम-आधारित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को मजबूत करना है।

अतः यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र की राजनीति में भारत की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। अपनी भौगोलिक स्थिति,



आर्थिक क्षमता, सैन्य शक्ति और कूटनीतिक सक्रियता के माध्यम से भारत इस क्षेत्र में एक सन्तुलनकारी और स्थिरकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। भविष्य में वैश्विक शक्ति सन्तुलन के निर्माण में हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र की भूमिका और भी बढ़ने की सम्भावना है, और इस प्रक्रिया में भारत की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

सुरक्षा चुनौतियाँ और भारत

21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में चीन का उदय एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक घटना के रूप में देखा जाता है। चीन की तीव्र आर्थिक वृद्धि, सैन्य आधुनिकीकरण तथा वैश्विक स्तर पर बढ़ती कूटनीतिक सक्रियता ने उसे विश्व राजनीति की प्रमुख शक्तियों में शामिल कर दिया है। इस परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से एशिया क्षेत्र में देखा जा सकता है, जहाँ चीन की बढ़ती शक्ति ने क्षेत्रीय शक्ति सन्तुलन को प्रभावित किया है। भारत के लिए यह स्थिति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि दोनों देश एशिया की प्रमुख उभरती शक्तियाँ हैं और उनके बीच ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा रणनीतिक प्रतिस्पर्धा मौजूद है।³⁰

भारत और चीन के सम्बन्ध जटिल और बहुआयामी रहे हैं। दोनों देशों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों के तत्व पाए जाते हैं। एक ओर दोनों देश ब्रिक्स (BRICS), शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और जी-20 जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सहयोग करते हैं, वहीं दूसरी ओर सीमा विवाद और क्षेत्रीय प्रभाव की प्रतिस्पर्धा उनके सम्बन्धों को प्रभावित करती है। इस प्रकार भारत-चीन सम्बन्धों को 'सहयोग और प्रतिस्पर्धा' के मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है।³¹

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद दोनों देशों के सम्बन्धों में तनाव का प्रमुख कारण रहा है। लगभग 3,400 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर दोनों देशों के बीच सीमा का स्पष्ट निर्धारण नहीं हुआ है। 1962 का भारत-चीन युद्ध इस विवाद का सबसे गंभीर उदाहरण था, जिसने दोनों देशों के सम्बन्धों को लंबे समय तक प्रभावित किया। यद्यपि बाद के दशकों में दोनों देशों ने सीमा पर शान्ति बनाए रखने के लिए कई समझौते किए, फिर भी समय-समय पर सीमा पर तनाव की घटनाएँ होती रही हैं।³²

हाल के वर्षों में लद्दाख क्षेत्र में भारत और चीन के बीच सीमा तनाव ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक ध्यान आकर्षित किया है। 2020 में गलवान घाटी में हुई झड़प ने दोनों देशों के सम्बन्धों को गंभीर रूप से प्रभावित किया। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि सीमा विवाद अभी भी भारत की सुरक्षा नीति के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है। इसके परिणामस्वरूप भारत ने सीमा क्षेत्रों में अपनी सैन्य तैनाती और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के प्रयास तेज कर दिए हैं।³³

चीन की 'बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव' (BRI) भी भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चुनौती के रूप में देखी जाती है। इस पहल के अन्तर्गत चीन एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ने वाली व्यापक अवसंरचना परियोजनाओं का निर्माण कर रहा है। भारत ने इस पहल के कुछ पहलुओं पर आपत्ति जताई है, विशेष रूप से चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) पर, जो पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर



गुजरता है। भारत का मानना है कि यह परियोजना उसकी सम्प्रभुता और क्षेत्रीय अखण्डता के लिए चुनौती उत्पन्न करती है।³⁴

इसके अतिरिक्त हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती गतिविधियाँ भी भारत की सुरक्षा चिन्ताओं को बढ़ाती हैं। चीन ने इस क्षेत्र में कई बन्दरगाह परियोजनाओं और अवसंरचना विकास में निवेश किया है, जिसे कुछ विश्लेषक 'स्ट्रिंग ऑफ पर्स' (String of Pearls) रणनीति के रूप में देखते हैं। श्रीलंका के हम्बन्टोटा बन्दरगाह, पाकिस्तान के ग्वादर बन्दरगाह तथा म्यांमार के क्वाकफ्यू बन्दरगाह जैसी परियोजनाएँ चीन की बढ़ती समुद्री उपस्थिति का संकेत देती हैं। भारत इन गतिविधियों को अपने सामरिक परिवेश में बढ़ते दबाव के रूप में देखता है।³⁵

चीन की बढ़ती सैन्य शक्ति भी भारत के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पिछले कुछ दशकों में चीन ने अपने रक्षा बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की है और अपनी सेना के आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया है। विशेष रूप से चीन की नौसेना और मिसाइल क्षमताओं का विस्तार एशिया में शक्ति सन्तुलन को प्रभावित कर रहा है। भारत को इस बदलते सैन्य सन्तुलन के सन्दर्भ में अपनी रक्षा रणनीति को मजबूत करना पड़ रहा है।³⁶

भारत ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कई रणनीतिक कदम उठाए हैं। सबसे पहले, भारत ने अपनी सैन्य क्षमता और रक्षा आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया है। भारतीय सशस्त्र बलों को आधुनिक हथियारों और तकनीकी प्रणालियों से सुसज्जित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके साथ ही सीमा क्षेत्रों में सड़क, पुल और अन्य अवसंरचना का विकास भी तेजी से किया जा रहा है, जिससे सैन्य तैनाती और प्रतिक्रिया क्षमता को मजबूत किया जा सके।³⁷

दूसरे, भारत ने अपनी कूटनीतिक सक्रियता को भी बढ़ाया है। भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप के देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया है। विशेष रूप से क्वाड (Quad) जैसे मंचों के माध्यम से भारत हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में सन्तुलन बनाए रखने का प्रयास कर रहा है। इन साझेदारियों का उद्देश्य क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री स्वतन्त्रता और नियम-आधारित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को मजबूत करना है।³⁸

भारत ने क्षेत्रीय सहयोग को भी अपनी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया है। दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और हिन्द महासागर क्षेत्र के देशों के साथ सहयोग को बढ़ाकर भारत क्षेत्रीय स्थिरता को मजबूत करने का प्रयास कर रहा है। बिम्स्टेक, आसियान और अन्य क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से भारत आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा दे रहा है।³⁹

इसके अतिरिक्त भारत ने 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इण्डिया' जैसी पहलों के माध्यम से अपनी रक्षा उत्पादन क्षमता को बढ़ाने का प्रयास किया है। इन पहलों का उद्देश्य रक्षा उपकरणों के आयात पर निर्भरता को कम करना और घरेलू रक्षा उद्योग



को मजबूत बनाना है। इससे भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और सुरक्षा क्षमता को भी मजबूती मिलती है।

चीन के साथ प्रतिस्पर्धा के बावजूद भारत और चीन के बीच आर्थिक सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं। दोनों देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्ध काफी बड़े हैं, और दोनों देश वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह प्रतिस्पर्धा और सहयोग के बीच सन्तुलन बनाए रखे।

समग्र रूप से देखा जाए तो चीन का उदय भारत के लिए अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करता है। एक ओर चीन के साथ आर्थिक सहयोग और बहुपक्षीय मंचों पर साझेदारी की सम्भावनाएँ मौजूद हैं, वहीं दूसरी ओर सीमा विवाद, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और रणनीतिक मतभेद दोनों देशों के सम्बन्धों को जटिल बनाते हैं।

अतः भारत की सुरक्षा और विदेश नीति के लिए यह आवश्यक है कि वह चीन के साथ सम्बन्धों में सन्तुलित दृष्टिकोण अपनाए। कूटनीतिक संवाद, आर्थिक सहयोग और सैन्य तैयारी के माध्यम से भारत इन चुनौतियों का सामना कर सकता है। 21वीं सदी में एशिया की शक्ति राजनीति में भारत और चीन दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी, और इन दोनों देशों के सम्बन्धों का प्रभाव वैश्विक शक्ति सन्तुलन पर भी पड़ेगा।

निष्कर्ष

21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं, जिनका प्रभाव वैश्विक शक्ति सन्तुलन पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शीत युद्ध के बाद स्थापित एकध्रुवीय व्यवस्था अब धीरे-धीरे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में परिवर्तित हो रही है। इस नई वैश्विक संरचना में भारत एक महत्वपूर्ण उभरती शक्ति के रूप में सामने आया है। अपनी भौगोलिक स्थिति, बढ़ती आर्थिक क्षमता, सैन्य शक्ति, तकनीकी विकास और सक्रिय कूटनीति के कारण भारत वैश्विक राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाने की स्थिति में पहुँच गया है।

भारत की भू-राजनीतिक स्थिति उसे एशिया, मध्य पूर्व और हिन्द महासागर क्षेत्र के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में स्थापित करती है। हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में समुद्री मार्गों की सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए भारत की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसी कारण भारत ने अपनी विदेश नीति में हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र को विशेष प्राथमिकता दी है और इस क्षेत्र में स्थिरता तथा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक पहल की हैं। भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति', समुद्री सुरक्षा सहयोग तथा क्षेत्रीय सम्पर्क परियोजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख आधार रणनीतिक स्वायत्तता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत अपनी राष्ट्रीय आवश्यकताओं और हितों के अनुसार स्वतन्त्र निर्णय ले सके। शीत युद्ध के दौरान भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता के सिद्धान्त से प्रेरित थी, जबकि वर्तमान समय में इसे अधिक व्यावहारिक रूप देते हुए रणनीतिक स्वायत्तता के रूप में विकसित किया गया है। इसके अन्तर्गत भारत विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ सन्तुलित सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास करता है। अमेरिका,



रूस, यूरोपीय संघ, जापान और अन्य देशों के साथ भारत के सहयोगात्मक सम्बन्ध इस सन्तुलन नीति को दर्शाते हैं।

भारत ने बहुपक्षीय कूटनीति को भी अपनी विदेश नीति का महत्वपूर्ण साधन बनाया है। संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन और विश्व व्यापार संगठन जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी यह दर्शाती है कि वह वैश्विक शासन व्यवस्था में अधिक प्रभावी भूमिका निभाना चाहता है। विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, वैश्विक स्वास्थ्य और आर्थिक सहयोग जैसे मुद्दों पर भारत ने रचनात्मक भूमिका निभाई है। इसके साथ ही भारत ने वैश्विक दक्षिण (Global South) के देशों के हितों को अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रमुखता से उठाने का प्रयास किया है, जिससे विकासशील देशों की आवाज को अधिक महत्व मिल सके।

हालाँकि भारत के सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। चीन के साथ सीमा विवाद और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा भारत की सुरक्षा नीति के लिए एक प्रमुख चिन्ता का विषय है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण सम्बन्ध, सीमा पार आतंकवाद, हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और वैश्विक आर्थिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत को अपनी सैन्य क्षमता, कूटनीतिक रणनीति और आर्थिक शक्ति को और अधिक सुदृढ़ करना होगा।

भारत ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। रक्षा आधुनिकीकरण, सीमा क्षेत्रों में अवसंरचना विकास, समुद्री सुरक्षा सहयोग और रणनीतिक साझेदारियों को मजबूत करना भारत की सुरक्षा रणनीति के प्रमुख तत्व हैं। इसके अतिरिक्त 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इण्डिया' जैसी पहलों के माध्यम से भारत अपनी आर्थिक और तकनीकी क्षमता को भी बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।

भविष्य की दृष्टि से देखा जाए तो भारत के सामने अनेक अवसर भी उपलब्ध हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी, हरित ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसन्धान, समुद्री अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय सम्पर्क परियोजनाओं के क्षेत्र में भारत की बढ़ती क्षमता उसे वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रभावशाली बना सकती है। यदि भारत अपनी आर्थिक वृद्धि को स्थिर बनाए रखने, सामाजिक विकास को मजबूत करने और प्रभावी कूटनीति को आगे बढ़ाने में सफल रहता है, तो वह आने वाले दशकों में विश्व राजनीति में एक प्रमुख निर्णायक शक्ति के रूप में उभर सकता है।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में भारत की भू-राजनीति और वैश्विक शक्ति सन्तुलन में उसकी भूमिका निरन्तर बढ़ रही है। भारत ने सन्तुलित कूटनीति, रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। आने वाले समय में भारत की विदेश नीति की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी रणनीतियों को कितनी प्रभावशीलता से अनुकूलित कर पाता है। यदि भारत अपनी आन्तरिक शक्ति, आर्थिक विकास और कूटनीतिक सक्रियता को बनाए रखता



है, तो वह न केवल एशिया बल्कि सम्पूर्ण विश्व में शक्ति सन्तुलन को प्रभावित करने वाली एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बन सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. Joseph S. Nye, *Understanding International Conflicts*, New York: Pearson, 2016.
2. World Bank, *Global Economic Prospects Report*, Washington DC, 2023.
3. Halford J. Mackinder, "The Geographical Pivot of History," *The Geographical Journal*, Vol. 23, No. 4, 1904.
4. C. Raja Mohan, *Samudra Manthan: Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific*, Carnegie Endowment, 2012.
5. David Malone, *Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy*, Oxford University Press, 2011.
6. Geoffrey Sloan and Colin S. Gray, *Geopolitics, Geography and Strategy*, London: Frank Cass, 1999.
7. Bimal N. Patel, *Indian Foreign Policy in a Changing World*, New Delhi: Routledge India, 2019.
8. Robert D. Kaplan, *Monsoon: The Indian Ocean and the Future of American Power*, New York: Random House, 2010.
9. Harsh V. Pant, *Indian Foreign Policy: An Overview*, Manchester University Press, 2016.
10. World Bank, *World Development Report*, Washington DC, 2022.
11. S. D. Muni, *India and South Asia: A New Strategic Balance*, New Delhi: Sage Publications, 2009.